हेल्थकेयर मैनेजमेंट

बढ़ रही है मैनेजर्स की मांग

हेल्थकेयर सेक्टर पिछले कुछ वर्षों में कई बदलावों से गुजरा है। मौजूदा कोविड-19 ने तो इसके सामने कई चुनौतियां पेश की हैं, जो आने वाले समय में कई तरह के बदलावों की ओर संकेत कर रही हैं। टेक्नोलॉजी की मदद से घर बैठे मरीजों को बेहतरीन स्वास्थ्य सुविधाएं मिल रही हैं। ऐसे में बढ़ती मांग और चुनौतियों के बीच हेल्थकेयर सेक्टर में बेहतर प्रबंधन के लिए मैनेजर्स की मांग बढ़ रही है। बता रही हैं इंदिरा राठौर

हेल्थ इज वेल्थ, इस उक्ति का एहसास मौजूदा दौर में सबसे ज्यादा हो रहा है। यूं तो पिछले एक दशक के दौरान हेल्थकेयर सेक्टर में तेजी से बदलाव आए हैं लेकिन कोरोना के दौर में ये बदलाव और तेज हो गए हैं। यह दौर हर इंडस्ट्री के सामने ढेरों मुश्किलें और चुनौतियां लेकर आया है। हेल्थ सेक्टर के लिए भी इसने कई नई चुनौतियां पेश की हैं। बड़े हॉस्पिटल कोरोना संक्रमितों की सेवा कर रहे हैं तो छोटे और मझोले स्तर के हॉस्पिटल्स अपना अस्तित्व बचाए रखने के लिए संघर्षरत हैं। सभी को बदलावों से जूझते हुए आगे बढ़ना है। पिछले कुछ वर्षों में मरीज आधारित चिकित्सा पद्धति और टेक्नोलॉजी ने भी इस सेक्टर में कई बड़े बदलाव किए हैं। घर में ही जांच की सुविधा, कम लागत वाले मॉडर्न हेल्थ वैलेट्स और लाइफ सेविंग इक्विपमेंट्स लोगों को घर पर मुहैया होने लगे हैं। कुल मिलाकर, यह पूरी इंडस्ट्री नए रंग-ढंग में ढलती नजर आ रही है। हेल्थकेयर वर्कर्स, डिजिटल उपकरण, बुनियादी ढांचे में परिवर्तन, हॉस्पिटलों का माहौल, मरीजों को बेहतरीन सेवा जैसे हर पहलू पर हो रहे बदलावों के मद्देनजर मैनेजमेंट प्रोफेशनल्स की भी जरूरत बढ़ रही है। बेहतर एडमिनिस्ट्रेशन और रणनीतियों के बलबूते ही आगे की राह मुकम्मल की जा सकती है, जो मैनेजमेंट में प्रशिक्षित योग्य युवा ही तय करते हैं।

रोजगार के मौके

कोविड -19 संकट ने हॉस्पिटल और हेल्थ मैनेजरों को हेल्थ सर्विस डिलिवरी के बिजनेस पहलू को हैंडल करना जरूरी बना दिया है। हॉस्पिटल मरीज की देखभाल के नए तरीकों की खोज में जुटे हैं। इसके लिए बजटिंग और रोडमैपिंग की जा रही है। जाहिर है, आने वाले समय में हेल्थकेयर मैनेजरों की डिमांड बढ़ेगी। अभी के समय में वे यंगस्टर्स, जो लॉकडाउन से पैदा हुई विकल्पहीनता से परेशान हैं, एमबीए की डिग्री लेकर इस सेक्टर में करियर बनाने का सपना देख सकते हैं। बेशक इसके लिए उनमें कम्युनिकेशन और ऑर्गेनाइजेशनल स्किल्स की जरूरत भी होगी।

हेल्थकेयर मैनेजमेंट में एमबीए करने के बाद छोटे हॉस्पिटल्स या आउट पेशेंट सेंटिंग में करियर की शुरुआत की जा सकती

एक्सपर्ट व्यू

इस सेक्टर में काम करने के लिए अच्छी कम्युनिकेशन स्किल, मैनेजिंग फैसिलिटीज, डिसिजंट प्लानिंग और प्रॉब्लम सॉल्विंग स्किल्स सीखनी होंगी। आज के मेच्योर टेक्नोलॉजी एक्सेस में आगे हैं। इससे डेटा स्टोरेज के साथ ही नए टूल्स का इस्तेमाल करके रिसर्च और इनोवेटिव प्रैक्टिस में मदद मिल सकती है। इस फील्ड में करियर बनाने की सबसे सकारात्मक बात यह है कि आप लगातार तरक्की के मौके पाएंगे। हेल्थ मैनेजमेंट/ हॉस्पिटल मैनेजमेंट प्रोफेशनल्स हॉस्पिटल के हेल्थ इन्फॉर्मेशन सिस्टम की देखरेख से लेकर टॉप फैकल्टी प्रोफेशनल्स के साथ में ऑर्गेनाइजेशन के साथ काम कर सकते हैं। सीनियर पदों पर मास्टर्स डिग्री की आवश्यकता भी पड़ सकती है।

डॉ. पी.आर. सोडानी, डीन और प्रो-प्रेसिडेंट आईआईएचएमआर यूनिवर्सिटी

प्रमुख संस्थान

- सिम्बॉयसिस इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ साइंसेज, पुणे
  www.sihspune.org
- ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, नई दिल्ली
  www.aiims.edu
- टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, मुंबई
  www.tiss.edu
- इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, जयपुर
  www.iihmr.org
- आर्म्ड फोर्सेज मेडिकल कॉलेज, पुणे
  www.afmc.nic.in
- अपोलो इंस्टीट्यूट ऑफ हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन, हैदराबाद
  www.apolloiha.ac.in
- भारती विद्यापीठ, पुणे
  www.imed.bharatividyapeeth.edu
- मानव रचना इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ रिसर्च एंड स्टडीज, फरीदाबाद
  www.manavrachna.edu.in

है। छोटे क्लिनिक हेल्थकेयर मैनेजर्स को मार्केटिंग और बजट से लेकर ह्यूमन रिसोर्सेज और रिकॉर्ड मैनेजमेंट तक कई तरह के काम करने का मौका प्रदान करते हैं। हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेटर, हेल्थकेयर मैनेजर, हॉस्पिटल सीएफओ या सीएमओ और मेडिकल प्रैक्टिस मैनेजर जैसी भूमिकाएं भी आगे जाकर उन्हें मिल सकती हैं। उनके सामने रेजिडेंशियल केयर एवं नर्सिंग फैसिलिटी के विकल्प भी होते हैं। बिजनेस पहलू संभालने के साथ ही इन प्रोफेशनल्स को प्रशासनिक जिम्मेदारियां सौंपी जा सकती हैं। साथ में मरीजों और उनके परिजनों के साथ हर तरह के संवाद और काउंसलिंग जैसी कई तरह की जिम्मेदारियां भी मिल सकती हैं। इसके अलावा राज्य या केन्द्र सरकार के लिए भी ये मैनेजर्स काम कर सकते हैं। इनमें रिसर्च, पब्लिक हेल्थ कार्यक्रमों की देखरेख, स्वास्थ्य, शिक्षा और जागरूकता संबंधी कार्यक्रमों का संचालन जैसे कार्य शामिल हो सकते हैं। इसके अलावा नेशनल और इंटरनेशनल कंसल्टिंग फर्म, स्ट्रैटेजिक मैनेजमेंट, प्रोजेक्ट मैनेजमेंट और क्वालिटी मैनेजमेंट के साथ भी हेल्थ मैनेजर काम कर सकते हैं।

क्या है अर्हता

किसी भी मान्यता प्राप्त कॉलेज-यूनिवर्सिटी से 50 प्रतिशत अंकों के साथ बैचलर डिग्री जरूरी है। बायो टेक्नोलॉजी, हेल्थ साइंस, मेडिसिन्स, माइक्रोबायोलॉजी जैसे विषयों में बैचलर डिग्री वाले छात्रों के लिए यहां संभावनाओं के द्वार अधिक आसानी से खुल सकते हैं। इसके अलावा कैट, मैट, जीमैट, सीमैट जैसी प्रवेश परीक्षाएं उत्तीर्ण करने से दाखिले की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।

इन प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी के लिए छात्रों को वर्बल रीजनिंग और रीडिंग कॉम्प्रिहेंशन, लॉजिकल रीजनिंग और डेटा इंटरप्रेटेशन, क्वांटिटेटिव एप्टिट्यूड या रीजनिंग के अलावा थोड़ा बहुत जनरल अवेयरनेस की तैयारी भी करनी चाहिए। कुछ इंस्टीट्यूट्स अपने अलग एंट्रेंस एग्जाम भी कराते हैं। इन परीक्षाओं के बाद संबंधित यूनिवर्सिटी अपने कुछ अलग टेस्ट राउंड कराती हैं। इनमें ग्रुप डिस्कशन, पर्सनल इंटरव्यू, राइटिंग एबिलिटी टेस्ट जैसे राउंड होते हैं। इन सारी औपचारिकताओं को पूरा करने के बाद अपने सभी दस्तावेज जमा कराने होते हैं।

क्या पढ़ेंगे

ज्यादातर यूनिवर्सिटी में हेल्थकेयर मैनेजमेंट के विषय लगभग एक समान होते हैं। प्रिंसिपल ऑफ मैनेजमेंट, हेल्थ केयर डिलिवरी सिस्टम, डेमोग्राफी, एपिडेमियोलोजी, बायो-स्टैटिस्टिक्स, क्वालिटी मैनेजमेंट, ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट, हेल्थ इकोनॉमिक्स, फाइनेंशियल मैनेजमेंट, स्ट्रैटेजिक मैनेजमेंट, डिजास्टर मैनेजमेंट आदि। ट्रेनिंग के अलावा थ्योरी, व्यावहारिक अनुभवों, निर्णय लेने और समस्या सुलझाने की क्षमता भी छात्र में होनी जरूरी है।

सॉफ्ट स्किल्स की भी दरकार

इस फील्ड में प्रशिक्षित उम्मीदवारों के लिए डिग्री के साथ ही सॉफ्ट स्किल्स का समुचित उपयोग हो सकता है। तकनीकी कौशल के अलावा, एक पेशेवर हेल्थकेयर मैनेजर को सॉफ्ट स्किल्स की भी बहुत जरूरत होती है। ये न केवल एक हेल्थकेयर प्रोफेशनल्स की टीम के प्रभारी होंगे, बल्कि बैठकों में अपने ऑर्गेनाइजेशन के प्रतिनिधियों की भूमिका निभाने के अलावा चिकित्सकों के साथ मिलकर भी काम करेंगे। नवीनतम परिवर्तनों, बेहतर संचार कौशल, सुविधाओं के प्रबंधन और समस्याओं को सुलझाने जैसी सभी स्किल्स उनमें होनी अनिवार्य है।

कोर्स की जरूरी जानकारी

- एमबीए हेल्थकेयर मैनेजमेंट या मास्टर्स ऑफ बिजनेस हेल्थकेयर मैनेजमेंट कुल दो साल का कोर्स है। इसमें छह-छह महीने के चार सेमिस्टर्स होते हैं।
- ग्रेजुएशन में 50 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण अभ्यर्थी इस कोर्स के लिए अप्लाई कर सकते हैं। इसमें एडमिशन के लिए प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करनी होती है। कैट, मैट, जीमैट, सीमैट जैसे टॉप एंट्रेंस एग्जाम क्रैक करके एमबीए में प्रवेश आसानी से मिल सकता है। डिस्टेंस लर्निंग से भी यह कोर्स किया जा सकता है।
- इसके प्रमुख विषयों में हेल्थकेयर एडमिनिस्ट्रेशन, हॉस्पिटल ऑपरेशंस, क्वालिटी मैनेजमेंट इन हॉस्पिटल्स, प्लानिंग एंड डिजाइनिंग इन हेल्थकेयर फैसिलिटीज, कस्टमर सेंट्रिक ऑर्गेनाइजेशन आदि आते हैं।
- आमतौर पर हेल्थकेयर मैनेजमेंट में एमबीए की फीस 2 से 10 लाख प्रतिवर्ष है।
- शुरुआती सैलरी 4-5 लाख से शुरू होती है। 2-3 वर्ष के अनुभव के बाद प्रोफेशनल को 10 से 15 लाख प्रतिवर्ष तक का सैलरी पैकेज भी मिल सकता है।
- टॉप रिक्रूटर हैं: सिप्ला, अपोलो लाइफ, विप्रो जीई हेल्थकेयर, केडिला हेल्थकेयर आदि।